1780 P
673
H

V/19/1

1361/10/21

* वन्देमातरम् *

राष्ट्रीय मल्हारें

अथवा

जख्मी भारत

891.431 Sh 23R

RECEIVED 10 DEC. 1930

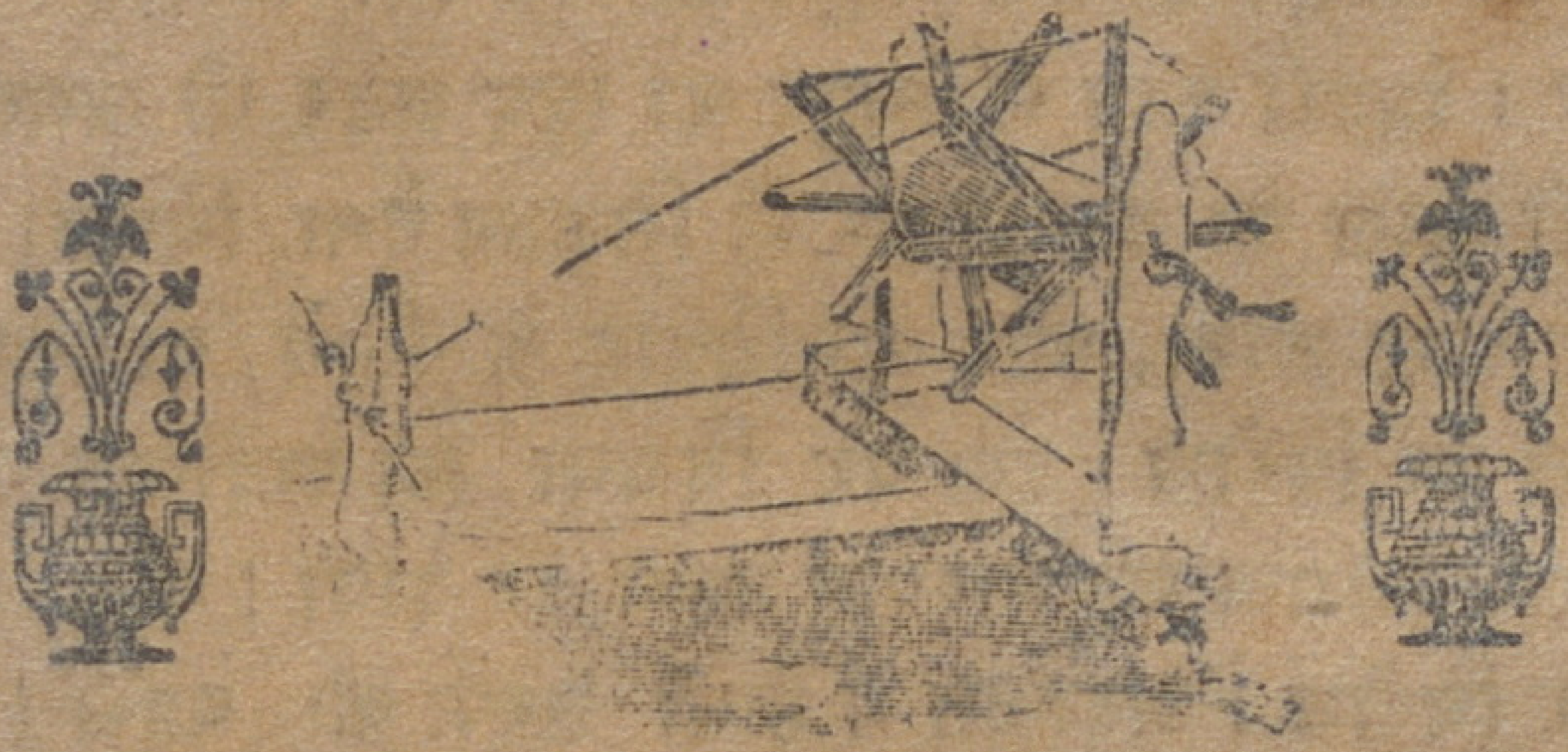

प्रकाशक व संग्रहकर्ता:-

आर० एन० शर्मा।

मिलने का पता:—

अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली देहली।

नोट:-जिस पर यह * निशान है वह हमारी रजिस्टर्ड है, नक्कालों को सावधान रहना चाहिये, और नहीं उनको खुदा गारत करेगा।

आगरे के वैश्यों में तहलका मचाने वाली पुस्तक
छप कर तैयार होगई।

नया

विलखती विधवा [नाटक]

आगरे में क्रान्ति

[जिसका पहिला एडीशन हाथों हाथ बिक गया]

एक अग्रवाल सेठ का छोटी उमर में अपने बेटे की शादी करना। शादी के चन्द दिन बाद लड़के का देहान्त हो जाना। उसकी स्त्री पर सास ननद का अत्याचार। उसका अत्याचार सहते सहते घर से निकलने का विचार करना। वह विचार ससुर को मालूम होना। ससुर का विधवा को ज़हर देने का विचार। ईश्वरी कोप से ससुर का खुद ज़हर पी लेना। बाद में सौतेली सास का उसको घर से निकाल देना, विधवा का पुरोहित के पास जाना, और पुनर्विवाह के लिये प्रार्थना करना। पुरोहित का विरोध। इस पर विधवा का अदालत में जाना और एक देशभक्त की मारफत नेशन पर दावा। सनातन धर्मियों का घोर विरोध। अदालत में दोनों तरफ की बहस। शास्त्रोक्त प्रमाण, विधवा का रोमांचकारी बयान, जूरियों की राय, अदालत का जजमेंट पढ़ने लायक है।

यह नाटक २०००० की जनता में "आनन्द नाटक" की तरफ से आगरे में खेला जा चुका है और ग्वालियर महाराज ने भी अपने नाटक घर में छपने से प्रथम खिलाया था। पूर हालात पढ़ियेगा। पृष्ट संख्या २५० है। अन्दर अदालत का चित्र और अन्य तीन चित्र हैं। टाइटिल पर तिरंगा चित्र। मूल्य १॥) डाक खर्च अलग।

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पताः—

अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली देहली।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 673
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

गज़ल *

सूरज इस देश का है, नहीं है सितारा गांधी।
ले के अवतार कोई आया है प्यारा गांधी॥
वीर है धीर है गम्भीर है कहते हैं सभी।
जेल में जाके कभी उफ न पुकारा गांधी॥
देश भक्त के लिये बहुत मुसीबत झेली।
तो भी हिम्मत वो कभी हाय न हारा गांधी॥
अपना तन मन वो सभी देश के अरपन करके।
आत्मिक बल का रखे सिर्फ सहारा गांधी॥
सत्याग्रह वृत रक्खा अन्न का त्यागन करके।
बहुत दिन फल से रहा करता गुज़ारा गांधी॥
धूम यूरुप में भी है और अमरीका में भी है।
मुल्क कोई दिन में ये हो जायगा सारा गांधी॥
कह गये मरते समय, आप यह महाराज तिलक।
आता हूं देश में ले जन्म दुबारा गांधी॥
फिकर मुतलक न करो बांधे रहो कस के कमर।
आन कर फिर मैं तुम्हें दूंगा सहारा गांधी॥
मेल आपस में करो देश के सब नर नारी।
बेड़ा ये "इन्द्र" करे पार तुम्हारा गांधी॥

गज़ल *

सीखो चरखे का हुनर बीर बना दे चरखा।
और गुलामी से तुम्हें मित्र छुड़ा दे चरखा॥
यह भी वरजिश है एक पास न आवे आलस।
सेहते जिस्म हो ताकत को बढ़ा दे चरखा॥
काते चरखा जो बशर ऐश में गुज़रे उसकी।
दिल के अरमान वो ग़म रंज मिटा दे चरखा॥
कोई मुफ़लिस न रहे हो तमंगर भारत।
खिज़ां गुलशन को चमन फिर ये दिखा दे चरखा॥
स्वतन्त्र यही मन्त्र है दस्तकारी करना।
तुमको स्वराज ये इक रोज दिला दे चरखा॥
देश रक्षा के लिये चक्र सुदर्शन बन जाये।
पक्ष भारत का करे पूरन निभा दे चरखा॥
महात्मा गांधी का उपदेश जो मानो सच्चा।
सीधा रस्ता है असहयोग बता दे चरखा॥
इच्छा जो कुछ है तेरी होगी वो पूरी सालग।
नाव भारत की अवश्य पार लगा दे चरखा॥

गांधी वियोग !

दूर आंखों से हो यह कब गवारा गांधी।
बैठते उठते करें तेरा नज़ारा गांधी॥

दिल से, जी से यही अब कहते हैं दौलत वाले ।
है गरीबों की गरीबी का सहारा गांधी ॥
क्या तमाशा यह तमाशा है कि नश्तर बनकर ।
उनकी आंखों में खटकता है हमारा गांधी ॥
आफतें आईं तेरे सर पे बलायें आईं ।
है वतन के लिये सब तुझको गवारा गांधी ॥
दिल से जी से वह हमेशां के लिये दास हुआ ।
कर लिया जिसने कभी तेरा नजारा गांधी ॥

जिस को देखो यही कहता है बड़े दर्द के साथ ।
होगया आज नजर बंद प्यारा गांधी ॥
सारी दुनियां में जमाने में पड़े इक हलचल ।

तू जो करदे जिस जानिब को इशारा गांधी ॥
कैद खाने के अँधेरे में पग है "इन्द्र" ।
देश-भारत का चमकता हुआ तारा गांधी ॥

"इन्द्र"

गजल

मत लाईयो चुंदरीया हमार विदेशी हो बालमा ।
है हुक्म गान्धी का अब चर्खा मंगाईये ॥
कपड़ा बनाने के लिये करघा भी लाईये ।

करो देशी पे तन मन निसार स्वदेशी हो बालमा ॥
दौलत गई सब ग़ैर मुमालिक को हमारी ।
बाक़ी रही है अब उसकी भी जाने की तैयारी ॥
फिर रोओगे धुन २ कपार विदेशी हो बालमा ।
कुरते फितूरी मिरजई देशी बनाईये ॥
बच्चों को फेलट केप हरगिज़ न पहिनाईये ।
बचे रोज़ाना सत्तर हजार विदेशी हो बालमा ॥
जेवर मेरा कर दीजीये गान्धी के हवाले ।
जिस से वह वीर हिन्द की इज़्ज़त को बचाले ॥
"इन्द्र" की है ये पुकार विदेशी न हो बालमा ॥

चरखे का चमत्कार

मेरा टूटे न चरखे का तार प्रेमी हो बालमा ॥
सब काम काज कर के मैं चरखा चलाऊंगी ॥
करघे पे बैठ कर के मैं कपड़ा बनाऊंगी ।
करू चादर वो तोशक तैयार प्रेमी हो बालमा ॥
चौसठ करोड़ जर न विलायत जायगा ।
भारत के भूखे भाईयों के काम आयगा ॥
लंका शायर के साथ पढ़ र-प्रेमी हो बालमा ॥
चरखा छुड़ा के मुल्क को नंगा बना दिया ॥
चरखे का मंत्र गान्धी ने फिर से बता दिया ॥

हमारा चरखा ही करेगा सुधार प्रेमी हो बालमा ॥
बरबाद कर दूं मुल्क को तोपों की भार से।
इंगलन्ड को रुला दूंगी चरखे के तार से॥
मेरा तकला ही जायगा पार प्रेमी हो बालमा।
चरखा चलाईये तो करोड़ों का लाभ हो ॥
इंगलेन्ड के जुलाहों के पैरों में भी खाब हो।
लुटे भूखे मज़दूर बाजार प्रेमी हो बालमा ॥
कर सकती कोई कौम न इसकी बराबरी।
चरखा सुदर्शन चक्र है शर्मा जलेसरी ॥
आये भारत में फिर से बहार प्रेमी हो बालमा।
हिन्दू और मुसलिम प्रेम से रहते रहें अगर॥
ताकत किसी की है नहीं छेडे हमे अगर।
सब मेल से होवेंगे पार प्रेमी हो बालमा ॥

गान्धी मल्हार

अरी बीबी सारी सहेली चलो संग, कपड़े पे धरना दीजीये। माल विदेशी बिकना बंद हो, अरी बहना चक्र में आवे इंगलिस्तान, कपड़े पे धरना दीजीये, लूटा है भारत देखो किस तरह; अरी बीबी पागल बनाया हिन्दुस्थान, कपड़े पे धरना दीजिये; जागन लागे हिन्दवासी नींद से अरी बीबी

खुलने लगे सब काम, कपड़े पे धरना दीजीये, ले गये सारा धन लूट के, अरी बीबी भारत तो जर की खान कपड़े पे धरना दीजिये, हरगिज़ न खरीदे माल विदेशो, अरी बीबी खद्दर के अब तो बिकते थान, कपड़े पे धरना दीजिये, लंकाशायर की हुलिया तंग हो, अरी बीबी मानचेस्टर की निकते ज्ञान, कपड़े पे धरना दीजिये, पीछे कदम अब न हट सके, अरी बीबी चाहे निकल जाय प्रान, कपड़े पे धरना दीजिये, घर से निकल के हम तो आगई, अरी बीबो घेरो सारो दूकान कपड़े पे धरना दीजिये, हरगिज़ न गाहक वहां पर आ सकें, अरी बीबी गान्धी का यही है फरमान कपड़े पे धरना दीजिये, जै जै माता तुम्हारी जग में जै रहें, अरी माता तुम्हारी करता है "रतन" गुणगान, कपड़े पे धरना दीजिये।

मल्हार *

अरी बहना हम तुम चले आओ संग, झूलेगी चम्पा बाग में। सूती डोरी बहना ले चलो, अरी बीबी डोलेगी बाग मझार, झूलेगी चम्पा बाग में, बुंदियां भी अब तो नन्ही नन्ही आ गईं, अरी बीबी सावन की आई बहार, झूलेगी चम्पा बाग में, चारो तरफ बादल छा रहें, अरी बीबी काहे लगाओ बार, झूलेगी चम्पा बाग में, ठंडी हवा भी देखो चल रही, अरी बीबी

भोरा को है खुशी अपार, झूलेगी चम्पा बाग में। डारी पै कोयल बैठी बोलती, अरी बहना गाती है चिड़िया बहार झूलेगी चम्पा बाग में, पी पी तो पपीहा देखो कर रहा, अरी बीबी पड़ी है कैसी फुहार झूलेगी चम्पा बाग में, कैसी यह बंशी की बहना तान है, अरी बीबी किसने बजाई जमुना पार, झूलेगी चम्पा बाग में, इतनी तो सुन के सारी चल दी अरी बहना पहुंची हैं बाग मझार, झूलेगी चम्पा बाग में, झूला डालो मिल के सब सखी, अरी बीबी झूलन को हुई है तैयार, झूलेगी चम्पा बाग में, धीरे धीरे से झूटे चल रहे अरी बीबी गावें खड़ी सब मल्हार झूलेगी चम्पा बाग में बारस जब आई बहना जोर से, अरी बीबी भागे सभी छोड़ छाड़ झूलेगी चम्पा बाग में।

मल्हार *

अरी बहना काहे बैठी हो चुपचाप, झंडा तो लेलो हाथ में। दुश्मन तो बहना सर पे छागये, अरी बीबी रक्षा करो अपनी आप चरखा तो ले लो हाथ में, किसका भरोसा बैठी देखती अरी बीबी दुश्मन से करो दो दो हाथ, चरखा तो ले लो हाथ में। प्रीतम तो बहना लड़ने जा रहे अरी बीबी तुम भी चलो सब साथ चरखा तो ले लो हाथ में, लक्ष्मी बाई दुर्गा की तरह, अरी बीबी तुम भी लड़ो दिन रात चरखा तो ले लो हाथ में। जल्दी निकालो बैरी घर से, अरी बीबी वरना करेगा

उतपात चरखा तो ले लो हाथ में। गांधी बाबा बहना कह रहे अरी बीबी चरखा चलाओ दिन रात चरखा तो ले लो हाथ में॥

मल्हार *

अरी बहना गांधी का है फरमान, चरखा तो कातो तुम सभी
अरी बीबी पहनो स्वदेशी कपड़े, चरखा तो कातो तुम सभी।
अरी बहना खद्दर का करो प्रचार चरखा तो कातो तुम सभी।
रेशम की साड़ी बहना छोड दो अरी बीबी खद्दर मंगाओ रंगदार चरखा तो कातो तुम सभी बालम घर में आवे यों कहो, अरी बीबी खद्दर बांधो दस्तार चरखा तो कातो तुम सभी। बन्द विलायत से आना सूत हो अरी बहना बैठे बुने भरतार चरखा तो कातो तुम सभी। उजडा है कैसा गुलशन देश का, अरी बीबी उस में फिर आवे बहार चरखा तो कातो तुम सभी। यश तुम्हारा फैले देशोंमे अरी बहना गांधी का गाओ मल्हार चरखा तो कातो तुम सभी। जितने कंगाल भारतवासी हो गये, अरी बीबी उतने ही बने जरदार, चरखा तो कातो तुम सभी। दुश्मन भागे फौरन हिन्द से, अरी बीबी मच जाय हाहाकार, चरखा तो कातो तुम सभी॥

गजल

बांध ले बिस्तर प जालिम शान अब जाने की है।

पेश काफी कर चुके अब पोल खुल जाने को है॥
गोलियां तो खा चुके अब तोप भी हम देख लें।
मर मिटेंगे मुल्क पर फिर इनकलाब होने को है॥
कौम के खादिम निहत्थों को तुमने भेजा जेल में।
आह से उनकी लो अब जेल खुल जाने को है॥
आगये हैं पटेल भी कारे राज जंग में।
देखना अब राजशाही बे नकाब होने को है॥
लिख दई गान्धी ने चिट्ठी आखिरी शाही के नाम।
अब भी संभल जाइये वरना आजादी होने को है॥
मालवी जी ने वार अपना कर दिया विदेशी माल पर।
देखना अब मैंन्चस्टर भी उजड़ जाने को है॥

चरखा ही भगवान है

बहनों चर्खे से हार शृंगार है।
चर्खा कातो तो बेड़ा पार है॥
चर्खा फूकेगा माल विदेशी।
चर्खा कतेगा माल स्वदेशी॥

चर्खा स्वदेशी तलवार है।
चर्खा कातो तो बेड़ा पार॥
बहनों गांधी जी का फरमान है।
चर्खा भारत का कल्याण है॥

इस पे आज़ादी का आसार है।
चर्खा कातो तो बेड़ा पार है॥

चर्खा चर्ख़ को नीचा दिखायेगा।
चर्खा स्वराज की राह बताएगा॥

इस से युरोप का आज़ार है।
चर्खा कातो बेड़ा पार है॥

इस से होंगे 'शरर' जिशान फिर।
इसी चर्खे पे दारो मदार है॥

चर्खा कातो तो बेड़ा पार है

चर्खा हमको शाद करेगा
दुश्मन को बरबाद करेगा,
बंदों को आज़ाद करेगा,

उजड़ा देश आबाद करेगा,
चर्खा हमको शाद करेगा॥

गज़ल

चरखा हम को शाद करेगा,

ज़ुल्म अगर सैय्याद करेगा,
बेकस पर बेदाद करेगा,

वह भी कुछ २ याद करेगा,

चर्खा हमको शाद करेगा ॥

चर्खे की जब तान चलेगी,
दुश्मन की कब दाल गलेगी,
आई आफत सर से टलेगी,

चर्खा हम को शाद करेगा ॥

चर्खे से तुम रिश्ता जोड़ो,
परदेशी कपड़े अब छोड़ो
दुश्मन हर आशा तोड़े,

चर्खा हमको शाद करेगा ॥

चर्खे से हम सूत निकालें,
अपना कपड़ा आप बनावें
कव्वा छोड हँस की चालें,

चर्खा हम को शाद करेगा ॥

चर्खे से स्वराज्य मिलेगा,
तख्त मिलेगा ताज मिलेगा,
हमको अपना राज्य मिलेगा,

चर्खा हमको शाद करेगा ॥

पंचरङ्गी चोला।

मेरा रंग दे पचरंगी चोला मां रंग दे पचरंगी चोला। टेक
इसी रंग में रंग के शिवा ने मां का बन्धन खोला॥ मां०॥
यही रंग प्रतापसिंह ने हल्दी घाट में खोला॥ मां०॥
इसी रंग में तिलकदेव ने यह स्वराज्य टटोला॥ मां०॥
इसी रंग में लाला जी ने मां का चरण टटोला॥ मां०॥
इसी रंग में भगतदत्त ने दुश्मन का दिल छोला॥ मां०॥
इसी रंग में यतीन्द्रदास ने अपना चोला छोड़ा॥ मां०॥
इसी रंग में सत्यवती ने जेल का फाटक खोला॥ मां०॥
इसी रंग में गांधी जी ने नमक पर धावा बोला॥ मां०॥
यही रंग अब्बास तैय्यब ने जेल में जाके घोला॥ मां०॥
इसी रंग में जवाहरलाल ने आत्म बल को तोला॥ मां०॥
इसी रंग में तारा सिंह ने सिक्खों का सत तोला॥ मां०॥
इसी रंग में मदन मोहन का असैंबली से दिल डोला॥ मां०॥
इसी रंग में मोती लाल का क़ानून से दिल डोला॥ मां०॥
इसी रंग में सैय्यद जी ने अल्लाहो अकबर बोला॥ मां०॥
इसी रंग में सत्यग्रह ने बन्दे मातरम् बोला॥ मां०॥
इसी रंग में वीरों ने चमकाया है शोला॥ मां०॥
इसी रंग में लिया देश ने आजादी का झोला॥ मां०॥

गांधी महिमा

गांधी तू आज हिन्द की एक शान बनगया।
सारी मनुष्य जाती का अभिमान बनगया॥
तू सत्य, अहिंसा, दया, निस्वार्थ से।
इस आज मृत्यु लोक में भगवान बनगया॥
तेरा प्रभाव सादगी, हस्ती को देखकर।
दुशमन भी बेज़बान हो हैरान बनगया॥
तेरी नसीहतों में वह जादूका असर है।
जिसको लगी तेरी हवा वह इनसान बनगया॥
तू दोस्त है हर क़ौम का हर दिल अज़ीज़ है।
सारा जहन तेरा क़दरदान बनगया॥
गो हिन्द आज उठ न सके आप से बलधीर।
फिर भी स्वराज्य लेने का सामान बनगया॥
धिक्कार है "इन्द्र" हमें तैंतीस करोड़ को।
तुझसा फकीर जेल का महमान बनगया॥

यदि आप बेरोज़गार हैं

तो

निराश न हों

यदि आप बेरोजगार हैं और स्वतन्त्रता से जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो आप हमारे यहां के १६ सफे के ट्रैक्ट क्यों न मंगा कर बेचते हो। १६ सफे के ट्रैक्ट २) सैकड़ा व २०) हजार थोक व्यापारियों को भेजे जाते हैं। बिना बिकी पुस्तकें वापिस कर लेते हैं। व्यापारियों को मांग व लाभ का विशेष ध्यान रक्खा जाता है। इसके अलावा बम्बई, मथुरा, हाथरस बनारस, लाहौर आदि का थोक माल बिक्री के लिए तैयार रहता है।

१. राष्ट्रीय झण्डा	-)	९ झांसी की रानी	-)
२. आजादी का बिगुल	-)	१० गान्धी की तोप	-)
३. क्रान्ति की लहर	-)	११ अंग्रेजी अकलगुम	-)
४. नमक का इतिहास	-)	१२ विधवा दुख दर्शन	-)
५. सत्याग्रह की तोप	-)	१३ राष्ट्रीय देवियां	-)
६. शहीदों की याद	-)	१४ जख्मी भारत	-)
७. सुदर्शन चक्र	-)	१५ गांधी की मशीनगन	-)
८. सत्याग्रह की अवाज	-)	१६ झन्डा आज़ादी	-)

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता:—

अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली,

देहली।

नरायणदास गुप्त के प्रबन्ध से द्वादशश्रेणी प्रेस, देहली में छपी।